International journal of interdisciplinary and multidisciplinary research

ISSN 2456–4567 (O)

हिन्दी - तेलुगु लोक गीतों में नव रसों की अभिव्यक्ति

डॉ. एस. सूर्यावती

प्राध्यापिका, शासकीय महाविद्यालय, चोडवरम, अनकापल्लि जिला, आंध्रपदेश

शोध सार: लोक गीत जनजीवन की सहज अनुभूतियों का सजीव साहित्यिक रूप हैं। इनमें मानव जीवन के प्रेम, हास्य, दुःख, साहस, भय और भक्ति जैसे विविध भाव व्यक्त होते हैं। इन भावों के माध्यम से श्रृंगार, करुण, वीर, हास्य, रौद्र आदि नव रसों की स्वाभाविक और सरल अभिव्यक्ति होती हैं। लोक गीतों की सरल भाषा रस की अनुभूति को अधिक प्रभावशाली बनाती हैं। नव रस लोक गीतों को भावात्मक गहरायी और सांस्कृतिक महत्त्व प्रदान करते हैं। इस प्रकार लोक गीत भारतीय लोक साहित्य में रस-परंपरा के सशक्त वाहक हैं।

बीज शब्द: अलंकार, लोक जीवन, सहानुभूति, आक्रोश, आत्मिक आनंद।

शोध सारांश: लोक गीत लोक साहित्य की एक महत्वपूर्ण अंग है। लोकगीतों के अभाव में लोक जीवन के माधुर्यपूर्ण स्वरूप की कल्पना करना कठिन है। अर्थात लोक गीत लोक जीवन का मनोरंजन करने का प्रमुख साधन है। लोक जीवन विभिन्न कार्यों में व्यस्त रहते हैं। परिश्रम और संघर्ष के समय अपने श्रम से उत्पन्न थकान को कम करने के लिए वे गुनगुनाते रहते हैं, जिससे लोकगीतों की सृष्टि मानी जाती है। "लोक गीत हृदय के खेत से उगते है। सुख के गीत उमंग के जोर से जन्म लेते हैं और दुख के गीत तो खौलते हुए लहू से पनपते और आंसुओं के साथ ही बनते हैं।"

पंडित रामनरेश त्रिपाठी ने लोक गीत के लिए क्रमशः 'ग्राम साहित्य' तथा 'ग्राम गीत' शब्दों का प्रयोग किया है। त्रिपाठी जी के शब्दों में "ग्राम गीत प्रकृति के उद्गार हैं। इनमें अलंकार नहीं केवल रस है, चंद नहीं, केवल लय है, लालित्य नहीं केवल माधुरी है। ग्रामीण मनुष्यों के स्त्री पुरुषों के मध्य हृदय नामक आसन पर बैठकर प्रकृति गान करती है। प्रकृति के वही गान ग्राम गीत है।" लोकगीत परंपरागत रूप से लोगों के जीवन-अनुभवों, सामाजिक मूल्यों, भक्ति और मनोरंजन को प्रतिबिंबित करते हैं।

काव्य का प्राण रस हैं। लोकगीतों रस का आविर्भाव पूर्ण रूप से होता हैं। लोकगीतों की रचना चाहे किसी भी क्षेत्र में हुई हो, चाहे किसी भी बोली में हुई हो किंतु इनका प्रभाव सर्वदेशीय एवं सार्वजनीन हैं। डॉ. गणेश दत्त जी कहते हैं- "लोकगीतों में रस की अजस्र गंगा प्रवाहित होती हैं। जनमन को रस स्नान कर देने की इनमें क्षमता हैं"। नवरसों के अध्ययन के माध्यम से हम तेलुगु, हिंदी जनता के भाव-जगत, भाषा-शिल्प और सांस्कृतिक मूल्यों को समझ सकते हैं। इस शोध में प्रत्येक सांस्कृतिक विश्लेषण को प्रस्तुत किया गया है।

1. श्रृंगार रस: लोकगीतों में श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति व्यापक रूप में परिलक्षित होता है। यह केवल स्त्री–पुरुष प्रेम तक सीमित नहीं है, बल्कि सौंदर्य, ममता, आनंद और पवित्र दांपत्य संबंध—इन सभी को समेटने वाला भावपूर्ण रस है। इसमें शारीरिक और मानसिक आकर्षण, प्रेमी-प्रेमिका का मिलन या उनसे होने वाला बिछोह आदि भावनाओं का चित्रण किया जाता हैं। निम्नलिखित गीत विवाह के अवसर पर वर-वधू के झूला गीत के रूप में गाया जाता है—

ऊँचे झूले पर बैठी सजनिया,
साजन झुलावे धीरे-धीरे।
चाँद भी देखे लाज से मुखड़ा,
फूल भी खिलें मन ही मन में॥

इस गीत में नायक–नायिका के कोमल प्रेम और आनंदमय मिलन का चित्रण है। ऊँचे झूले पर बैठी सजनिया और उसे धीरे-धीरे झुलाता साजन उनके मधुर दाम्पत्य सुख को प्रकट करते हैं। नायिका का सौंदर्य इतना मनोहर है कि उसे देखकर चंद्रमा भी लज्जित हो जाता है। प्रेमपूर्ण वातावरण के प्रभाव से प्रकृति तक आनंदित दिखाई देती है और फूल भी मानो मन-ही-मन खिल उठते हैं। इस प्रकार गीत में श्रृंगार रस का सौम्य और मर्यादित रूप अभिव्यक्त हुआ है।

तेलुगु श्रृंगार गीत-

चाँदनी झूले में श्याम सुहाने झूलें,	वेन्नेला ऊयललो वेन्नय्या ऊगे
मुरली बजे तो मन के बंधन खुलें।	मुरलि मोगिते मनसु तरिगे
राधा संग रमते, छवि अति प्यारी,	राधतो कलिसि रम्यंगा ऊगे
श्रृंगार-भक्ति बन उठे गीत निराली।	श्रृंगारा भक्ति गीतमै पोंगे॥

इस गीत में कृष्ण–राधा के प्रेममय और दिव्य दृश्य का सुंदर चित्रण है। चाँदनी से आलोकित झूले में श्रीकृष्ण का झूलना वातावरण को सौंदर्य और माधुर्य से भर देता है। जैसे ही कृष्ण की मुरली गूँजती है, मन आकर्षित होकर प्रेम में पिघल जाता है। राधा के साथ उनका रमणीय मिलन श्रृंगार और भक्ति—दोनों भावों का मधुर संगम बन जाता है। यह दृश्य केवल लौकिक प्रेम नहीं, बल्कि आत्मा और परमात्मा के पवित्र संबंध का प्रतीक है।

सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टिकोण : इस गीत के गाए जाने के समय वधू–वर के चारों ओर परिवार के सदस्य, रिश्तेदार और मित्र एकत्र होते हैं। गीत सामूहिक गायन का रूप ले लेता है। इसलिए यह केवल व्यक्तिगत अनुभूति नहीं रह जाता, बल्कि एक सामाजिक उत्सव बन जाता है। यहाँ श्रृंगार समाज में आनंद बाँटने वाली शक्ति के रूप में प्रकट होता है।

2. हास्य रस: हास्य रस लोकगीतों में एक सामान्य और प्रिय रस है, जो मनुष्य की जीवन में हँसी -मजाक, व्यंग्य और मजेदार स्थितियों को उजागर करता हैं। जनता के दैनिक जीवन की विचित्रताएँ, विरोधाभास और हास्यपूर्ण स्थितियाँ गीतों के रूप में अभिव्यक्त होती हैं। नीचे दिया गया गीत एक हास्य गीत है, जिसे श्रोताओं में हँसी उत्पन्न करने के लिए गाया जाता है।

"सास कहे बहू बडी भोली, घी में भी पानी दोले,
बहू कहे सास जी भारी मीठी, बातों में ही घोले।"

सास-बहू की मीठी तकरार और चुटीली भाषा से श्रोताओं को हँसी आती हैं। घरेलु व्यंग्य में हास्य रस की सुंदर अभिव्यक्ति हैं।

"नाक को तीन साल,	"मूकुनि मूडेल्लु
बालों को सात साल,	जुट्टुनि एडेल्लु
बेटे को सोलह,	कोडुक्कि पदहारु
बेटी को बारह।।	कूतुरुकि पन्नेंडु
बैंगनों की टेढ़ाई,	वंकायला वंकरा
मटर जैसे होंठ,	पेसरला पेदवुलु
कपड़े जितना बड़ा गोपाल,	गुड्डंत गोपलम
तीन साल का बूढ़ा आदमी।।"	मूडेंड्ल मुसलिवाडु ।।"

हास्य का स्रोत : इस गीत में अतिशयोक्ति प्रमुख रूप से दिखाई देती है। *"नाक को तीन साल"* — उम्र से असंबद्ध तरीके से शरीर के विभिन्न अंगों को अलग-अलग वर्षों की संख्या देना। इस प्रकार का असंभव और विचित्र चित्रण श्रोताओं को अनायास ही हँसा देता है।

सामाजिक पृष्ठभूमि :इस प्रकार के गीत सामान्यतः वीरगाथाएँ और ग्रामीण उत्सवों जैसे अवसरों पर गाए जाते हैं। ये श्रोताओं की थकान को दूर कर मनोरंजन प्रदान करते हैं। ग्रामीण वातावरण में जब लोग एकत्र होते हैं, तब हास्य उनके जीवन के तनाव को कम करने का साधन बन जाता है।

इस प्रकार हास्य रस लोकगीतों में जनता के आनंदपूर्ण स्वभाव तथा जीवन की कठिनाइयों को हँसी-मज़ाक के साथ हल्का करने की प्रवृत्ति को प्रतिबिंबित करता है।

3. करुण रस : लोकगीतों में करुण रस जनता के दुःख, पीड़ा, शोक, विषाद और कष्टों को अभिव्यक्त करने का प्रमुख माध्यम है। विशेष रूप से ग्रामीण जीवन की दरिद्रता, व्यक्ति की अशक्ति, पराजय, बिछोह, संत्रास जैसी भावनाएँ, प्राणहानि—ये सभी करुण रस की प्रेरणा बनते हैं। नीचे दिया गया गीत नायिका नायक के बिछोह से विह्वल होती नजर आती हैं-

"पिया गए परदेस सजन, सूना भयो आँगन,

दिन कटे न रतिया बीते, रोवे मोरे नयना।"

पति के परदेस चले जाने से पत्नी अकेली और दुःखी हैं। विरह में रोती नायिका की पीडा से श्रोता का हृदय द्रवित हो जाता हैं। यह विरहजन्य करुण रस का सुंदर उदाहरण हैं।

नीचे दिया गया तेलुगु गीत एक माँ के द्वारा अपनी बेटी की मृत्यु पर व्यक्त की गई गहन वेदना को दर्शाता है।

"ओ माँ! क्या तुमने मेरी बच्ची को देखा है?	ओई तल्ली ना बिड्डनि चूसावा?
क्या तुमने उसके खेले हुए गीत सुने हैं?	आडिना पाटलु विन्नावा?
खेत में कभी न गिरने वाली मेरी सोने-सी बेटी,	पोलमुलो कूलिपोनि बंगारु कूतुरु,
क्या वह बैलों की जुए में डूब गई?	काडेद्दुला जोललो मुनिगिपोयेदा
चिल्ला-चिल्लाकर पुकारा, पर कोई उत्तर न आया,	अरचि पिलिचानु, समाधानम रालेदु,
हृदय में घाव बन गया, बस आँसू ही शेष रह गए॥"	गुंडेलो गायमै कन्नील्लु मिगिलायि॥

यह पंक्ति अनाथ भाव, माँ-बेटी के बंधन से बिछुड़ने की पीड़ा को व्यक्त करती है। यह ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है।

सामाजिक पृष्ठभूमि : इस प्रकार के गीत सामान्यतः दुर्घटनाओं, मृत्यु या प्राकृतिक आपदाओं के समय गाए जाते हैं। विधवाएँ, अनाथ और श्रमिक अपनी पीड़ा व्यक्त करने के लिए गीत को ही माध्यम बनाते हैं। यहाँ करुण रस व्यक्तिगत दुःख को सामूहिक अनुभूति में बदल देता है।

करुण रस का मूल स्रोत दुःख है। इस गीत को सुनने वाले माँ-बेटी के स्नेह-बंधन को स्मरण कर भावविभोर हो जाते हैं। शोक-अनुभूति के साझा होने से सामाजिक सहानुभूति का विस्तार होता है।

4. रौद्र रस: लोकगीतों में रौद्र रस मुख्य रूप से अन्याय, शोषण और अत्याचार के विरुद्ध जनता के क्रोध, आक्रोश, विरक्ति तथा प्रतिरोध को व्यक्त करता है। ग्रामीण समाज में ज़मींदारों, प्रभावशाली लोगों और शोषक वर्गों के प्रति उत्पन्न आक्रोश लोकगीतों के रूप में प्रकट हुआ है।

हिंदी का लोक गीत-

"खून खौल उठा धरती माता
देख अत्याचार की यह बाता।
तलवार उठी बिजली बन,
दुश्मन काँपे रण के बन॥"

इस गीत में अत्याचार को देखकर उत्पन्न हुए तीव्र क्रोध और प्रतिशोध की भावना को व्यक्त किया हैं। अन्याय को देखकर धरती माता का रक्त खौल उठता हैं। उसके रौद्र रूप को देखकर शत्रु युद्ध भूमि में भयभीत होकर काँपने लगते हैं।

तेलुगु में रौद्र रस का गीत इस प्रकार हैं-

"ज़मींदार का अत्याचार, अब और नहीं सहेंगे!	"जमींदारी दौर्जन्यमा इका चालदुरा!
हमारा रक्त बहाकर तूने सोना जमा किया!	मा रक्तम चिंदिंचगा नीवु बंगारम पोगुचेसावुरा
हमारे खेतों की फसल लूट ली,	मा पोलाला पंटा दोचुकुन्नावुरा
हमारे बच्चों के गेहूँ तक खा गए!"	मा पिल्लला गोधुमलु तिन्नावुरा।"

यह पंक्ति जनता की उग्र और आक्रोशपूर्ण आवाज़ को व्यक्त करती है। फसल, गेहूँ जैसे शब्द जीवन-निर्वाह के साधनों की लूट के प्रति आक्रोश का संकेत देते हैं।

सामाजिक पृष्ठभूमि : इस प्रकार के गीत सामान्यतः किसानों के विद्रोह, जनआंदोलनों और दलित संघर्षों के समय जन्म लेते हैं। उय्यालवाड़ा नरसिंह रेड्डी, पलनाटी वीरों की कथाएँ और तेलंगाना सशस्त्र संघर्ष जैसे ऐतिहासिक संदर्भों में ऐसे गीतों ने जनता को प्रेरित किया है।

रौद्र रस जनता में आत्मसम्मान की भावना को जाग्रत करता है और अन्याय का सामना करने का साहस प्रदान करता है। तेलुगु लोकगीतों में रौद्र रस सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष की चेतना को प्रतिबिंबित करने वाला प्रमुख रस है।

5. वीर रस: लोकगीतों में वीर रस का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यह जनता के पराक्रम, साहस और स्वतंत्रता-प्रेम को प्रतिबिंबित करता है।

वीर रस से संबंधित हिंदी का लोक गीत इस प्रकार हैं -

"ढोल नगाडा रण में बाजे,

वीर सपूत सीमा पर साजे॥

हँसते-हँसते शीश चढावे,

भारत माँ का मान बढावे।”

रणभूमि में युद्ध के नगाडे बज रह हैं और वीर सपूत प्रसन्न मन से युद्ध के लिये सजते हैं। वे खुशी से बलिदान देने को तैयार हैं, जिससे मातृभूमि का गौरव बढता हैं। इसमें उत्साह, बलिदान, वीरता प्रकट होती हैं।

नीचे दिए गए तेलुगु लोक गीत में रानी रुद्रमदेवी, पलनाटी वीर और उय्यालवाड़ा नरसिंह रेड्डी जैसे ऐतिहासिक व्यक्तित्वों का उल्लेख किया गया है।

“रानी रुद्रमदेवी हमारी माँ जैसी वीरांगना, तलवार थामकर शत्रुओं को धराशायी कर दिया!	रानी रुद्रमदेवी मा तल्लिलांटि वीरम्मा, खड्गम पट्टि शत्रुवुलनु कूलदोयेदम्मा!
पलनाटी वीरों ने रणभूमि में ध्वज फहराए, पलनाटी युद्ध में रक्त की धार बहा दी!	पलनाटि वीरुलु पोरला जेंडालु एगरेसि पल्नाटि युद्धमंदु रक्तम चिंदिंचिरम्मा
उय्यालवाड़ा नरसिंह रेड्डी की वीर गाथा, ब्रिटिश शोषकों के हृदय को कंपा दिया!”	उयालवाडा नरसिम्हारेड्डि वीरगाधा ब्रिटिषु दोपिडीदार्ल गुंडेलु कदलगोट्टिरम्मा

भावार्थ : वीर नारी की तुलना माँ से कर सम्मान और साहस दोनों को व्यक्त किया गया है। यह पंक्ति वीरों के बलिदान का गौरवगान करती है। ब्रिटिश विरोधी संघर्ष का प्रतीकात्मक चित्रण करती हैं।

सामाजिक पृष्ठभूमि : वीर रस मुख्यतः युद्ध-गीतों, वीरगाथाओं और विद्रोही गीतों में दिखाई देता है। ये गीत जनता को प्रेरणा देने और संघर्ष के लिए उत्साहित करने वाली शक्ति के रूप में कार्य करते हैं। ग्रामीण समाज में वीरों की गाथाओं को पीढ़ी-दर-पीढ़ी गाया जाता रहा है और उन्हें आदर्श के रूप में स्थापित किया गया है।

वीर रस जनता में पराक्रम, साहस और त्याग की भावना को जाग्रत करता है। तेलुगु लोकगीतों में वीर रस ऐतिहासिक संघर्षों को जीवंत बनाए रखने वाली सशक्त ऊर्जा के रूप में प्रतिष्ठित है।

6. भयानक रस: लोकगीतों में भयानक रस जनता के अज्ञात भय, अँधेरे वातावरण, भूत-प्रेत की कथाएँ और अद्भुत घटनाओं जैसे तत्वों को प्रतिबिंबित करता है। यह गीत ग्रामीण रात के वातावरण और भूतों के भय का चित्रण करता है।

हिंदी के लोकगीत में रात की भयानक वातावरण का चित्रण प्रस्तुत हैं -

“अंधियारी रात, श्मशान किनारे,
भूत खडे हैं केश पसारे।
उल्लू बोला, सियार पुकारे,
डर से काँपे बालक सारे ॥”

रात का अँधेरा, श्मशान का वातावरण, भूत-प्रेत और पक्षियों की आवाज भय को बढा देती हैं। बच्चे डर से काँप उठते हैं। इसमें अलौकिक भय का चित्रण हैं।

तेलुगु लोकगीत में भी इसी प्रकार के भाव देखने को मिलता हैं-

"रात गहरा जाने पर सुनसान राह में,	रात्रि पोद्दुपोयि नदुमा बाटलो
लकड़ियों की खड़खड़ाहट आई भूतों की डगर में।	कर्रला कर्रलशब्दमोच्छे दयाला दारिलो
दिखाई न दे, घना कुहासा छा गया,	कनबडका कम्मटि मुसुरु पोगमंचु
कानों में गूँजा उल्लुओं और चमगादड़ों का शोर॥"	चेवुल्लो विनिपिंचे गूडला गब्बिलमंचु

रात के समय अकेले चलने से उत्पन्न भय का संकेत, पिशाचिक स्थान की कल्पना,भय को बढ़ाने वाली प्राकृतिक ध्वनियाँ भयानक रस का अद्भुत उदाहरण हैं।

सामाजिक पृष्ठभूमि : ग्रामीण समाज में भूत-प्रेत की कहानियाँ, पिशाचिक कथाएँ और भयावह गीत प्रचलित रहे हैं। इन्हें प्रायः बच्चों को डराने या रात में बाहर जाने से रोकने के लिए गाया जाता था। साथ ही, ये रहस्यमय वातावरण को भी प्रबल बनाते थे।

भयानक रस लोगों के अवचेतन में बसे भय को प्रतिबिंबित करते हुए लोकसंस्कृति में रात्रि के रहस्य को उजागर करता है। तेलुगु लोकगीतों में भयानक रस एक ओर सिहरन पैदा करता है, तो दूसरी ओर मनोरंजन भी प्रदान करता है।

7. बीभत्स रस: लोकगीतों में बीभत्स रस विकृत, घृणित और भय उत्पन्न करने वाले दृश्यों की अभिव्यक्ति करता है। यह सामान्यतः अंत्येष्टि क्रियाओं, शव के आसपास के वातावरण तथा भयावह या दुर्घटनाजन्य घटनाओं के संदर्भ में गाया जाता है।

हिंदी लोकगीत इस प्रकार हैं -

"कटी भुजाएँ, टूटे माथे,
आँख निकली लटकी साथे।
लाशों पर लाशें पडी,
देख घृणा की धारा बही ॥"

रण्भूमि में कटे अंग, निकली आँखे और लाशों के ढेर अत्यंत विकृत दृश्य उपस्थित करते हैं। इसे देखकर मन में गहरी घृणा वितृष्ण उत्पन्न होती हैं।

तेलुगु के लोकगीत का उदाहरण -

“शवपेटिका के चारों ओर हवा में दुर्गंध,
जलती चिताओं से उछलकर द्रव्य सिर पर आ पड़ा।
कौवों की फड़फड़ाहट, दिन-दहाड़े पक्षियों की चीख,
मन को घृणा, नींद को भी विघ्न।

शवपेटिका चुट्टू गालिलो गंधम
मंटलेगरगा द्रव्यम शिरस्सु पै चेरिंदि।
काकुला दूकुडु, पगलूरि पिट्टला चीच
मनसुनके असह्यं, निद्रके विघातं।

मृत्यु के वातावरण और उससे जुड़ी घृणित अनुभूति का संकेत, अंतिम दुःख और असह्य स्थिति का चित्रण, प्राकृतिक ध्वनियों के माध्यम से विकृति और घृणा की अनुभूति होती हैं।

सामाजिक पृष्ठभूमि : बीभत्स रस प्रायः मृत देह के आसपास, अंत्येष्टि के समय तथा ग्रामीण संदर्भों में व्यक्त होता है। लोग इन गीतों के माध्यम से असह्य अनुभूतियों को उभारकर सावधानी और चेतना उत्पन्न करते थे।

बीभत्स रस जनता में विकृति और घृणा की अनुभूति को तीव्र करता है। तेलुगु लोकगीतों में बीभत्स रस असह्यता और विरक्ति को अभिव्यक्त करने वाला एक महत्वपूर्ण रस माना जाता है।

8. अद्भुत रस: लोकगीतों में अद्भुत रस विचित्रता, आश्चर्य और अपूर्व अनुभूति को व्यक्त करता है। यह देवताओं, चमत्कारपूर्ण घटनाओं और अद्भुत व्यक्तित्वों के वर्णन के अवसरों पर दिखाई देता है। नीचे दिया गया गीत माँ भवानी के रूप का अद्भुत चित्रण हैं -

“सिंह सवारी आयी भवानी
महिषासुर मर्दिनी रानी
नौ दुर्गा का रूप निराला
भक्तों का दुःख हरने वाली ॥”

देवी भवानी सिंह पर सवार होकर प्रकट हुई हैं। वे महिषासुर का संहार करने वाली वीर रानी हैं। नौ दुर्गाओं के रूप में उनका स्वरूप अत्यंत अद्भुत और दिव्य है। वे अपने भक्तों के सभी दुःख दूर करने वाली करुणामयी माता हैं।

नीचे दिया गया तेलुगु गीत ग्राम देवता के उत्सव के समय गाया जाता है।

“करुणा दिखाने वाली गंगा मैय्या, आँखों में बिजली हैं,
एक कदम रखते ही पूरा गाँव बदल जाता हैं।
सीमा लाघकर चलने वाली माँ
सारे गाँवों की रक्षा करने वाली माँ
तेरी दृष्टि पडते ही अँधेरा दूर हो जाता हैं

“करुणा चूपे गंगम्मा, कल्लल्लो मेरुपु
ओक्का अडुगु वेसे सरिकि ऊरे मारिपोये
पोलिमेरा दाटि नडिचे तल्लि
पल्लेलन्नी कापाडे तल्लि
नी चूपु पडिते चीकटि पारे

तेरे नाम लेते ही सारा भय भाग जाता हैं।" नी नामम पलिकिते भयं पारे।"

इन पंक्तियों में ग्राम देवी गंगाम्मा की करुणा और अलौकिक शक्ति का अत्यंत सुंदर चित्रण किया गया हैं। यहाँ भक्ति भाव के साथ-साथ अद्भुत रस स्पष्ट रूप से प्रकट होता हैं।

सामाजिक पृष्ठभूमि :अद्भुत रस के गीत सामान्यतः उत्सवों, ग्राम्य जातरों तथा देवी–देवताओं की महिमा-कथाओं में गाए जाते हैं। इन गीतों के माध्यम से लोगों को दिव्यता, आश्चर्य और उत्साह की अनुभूति होती है। यह ग्रामीण जीवन में आध्यात्मिक आनंद और सामूहिक उल्लास का संचार करता है।

अद्भुत रस लोगों में आश्चर्य, भक्ति और उत्साह को जागृत करता है। तेलुगु लोकगीतों में अद्भुत रस दिव्य, अपूर्व और विस्मयकारी घटनाओं के रस-स्वरूप के रूप में प्रतिबिंबित होता है।

9. शान्त रस: लोकगीतों में शान्त रस जनता की शांति, भक्ति, वैराग्य, तृप्ति, समत्व, आत्मिक आनंद और मानसिक संतुलन को प्रतिबिंबित करने वाला महत्वपूर्ण रस है। यस सांसरिक दुःख-सुख से ऊपर उठकर अत्मानुभूति और मोक्ष की अनुभूतिन से संबंधित हैं। यह प्रायः भजनों, व्रत-गीतों के अवसरों पर गाया जाता है।

हिंदी का लोक गीत-

"राम नाम रस पी लियो रे भाई
साँस-साँस में प्रभु को ध्यायी।
छूटे सब मोह माया बंधन
मन मंदिर में शांति समाइ ॥"

जो ईश्वर के नाम में पूरी तरह लीन हो गया, वह हर साँस के साथ प्रभु का स्मरण करता है। इस निरंतर भक्ति से मनुष्य के भीतर के सभी मोह–माया और सांसारिक बंधन छूट जाते हैं। जब हृदय ईश्वर-स्मरण से भर जाता है, तब मन रूपी मंदिर में शांति, संतोष और आत्मिक आनंद का वास हो जाता है।

तेलुगु के शांत रस से युक्त गीत –

राम नाम का उच्चारण करते ही शात हो जाता हैं मन, रामा नामम पलिकिते मनसु नेम्मदय्ये
दूर हो जाता हैं सारा भोज हल्का हो जा ता हैं हिय ॥ भारं अंता दूरमै हृदयं तेलिपोये ॥

जब व्यक्ति श्रद्धा और विश्वास के साथ राम नाम का स्मरण करता हैं, तो उसकी मन की चंचलता और अशांति दूर हो जाती हैं। जीवन के दुःख, चिंता और कष्ट रूपी बोझ हट जाते हैं। अर्थात ईश्वर का स्मरण मन को शांति, आनंद और आंतरिक सुख प्रदान करता हैं। इसमें शांत रस की अनुभूति प्रकट होती हैं।

सामाजिक पृष्ठभूमि : शान्त रस के गीत ग्रामीण उत्सवों, भक्ति-कीर्तन और व्रत अनुष्ठानों में गाए जाते हैं। इन्हें सुनने वालों को मानसिक शांति और रचनात्मक आनंद की अनुभूति होती है। ग्रामीण जीवन में, कठिनाइयों के बीच यह रस लोगों को मानसिक उल्लास और सामूहिक एकता प्रदान करता है।

शान्त रस लोगों में आत्मिक शांति, स्थिरता, वैराग्य, तृप्ति, समत्व, निर्लिप्तता, भक्ति और सामूहिक सौहार्द की भावना उत्पन्न करता है। लोकगीतों में शान्त रस प्रकृति, भक्ति और मानसिक शांति का प्रतीक बनकर सामने आता है।

निष्कर्ष : लोकगीतों में नवरसों का महत्व अत्यंत विशिष्ट है। इनके अध्ययन से स्पष्ट होता है कि प्रत्येक रस जनता की भावनाओं, जीवन-कौशल और सांस्कृतिक मूल्यों को प्रतिबिंबित करता है। हिंदी और तेलुगु भाषा के लोक गीतों में अनेक समानतायें पाये जाते हैं। भारत देश के सभी भाषाओं केव साहित्य में भावात्मक एकता का दर्शन होता हैं। अतः यह स्वाभाविक हैं कि रसों की अभिव्यक्ति प्रत्येक भाषा के लोक साहित्य में परिलक्षित होता हैं।

लोकगीत जनमानस की अनुभूतियों, सामाजिक जीवन, भक्ति-भाव, मनोरंजन, शांति, क्रोध और आश्चर्य जैसे विविध भावों को व्यापक रूप में अभिव्यक्त करते हैं तथा नवरसों की सहायता से इन्हें साहित्यिक रूप प्रदान करते हैं। इस शोध के माध्यम से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि लोकसाहित्य के रसात्मक वैशिष्ट्य को समझने में नवरसों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रंथ:

1. डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय : लोकसाहित्य की भूमिका।
2. डॉ. श्रीराम शर्मा : लोक्साहित्य – सिद्धंत एवं प्रयोग।
3. डॉ. गणेश दत्त सारस्वत : हिंदी लोकसाहित्य, प्रथम खंड।
4. डॉ. सत्येंद्र : लोक साहित्य विज्ञान।
5. पं. राम नरेश त्रिपाठी : ग्राम साहित्य, पहला भाग।
6. भास्कर, जी. - तेलिगु जानपद सहित्यम: थीमलु मरियु रूपालु।
7. नरसिंहा, पी.वी. - तेलुगु जानपदा सहित्यमलो नवरसालु।
8. नारायण, एम.एस. - तेलुगु जानपदा गीताल्लो अलंकारालु।
9. नायनि, कृष्णकुमारी – तेलुगु जानपदा गेया गाथलु।